आरक्षण से दलितों का जीवन सुधरा

मोहनलाल धिवरिया

सदियों से ठुकराए गए लोगों को एक बैसाखी के बिना आगे बढ़ते नहीं देख सकते। कितनी जरूरत थी एकलव्य को अपने अंगूठे की, किंतु क्रूर गुरू द्रोणाचार्य ने बिना शिक्षा दिए ही उसका अंगूठा दान में ले लिया। ऐसी गुरू भक्ति कोई दिखा नहीं सकता जैसा कि प्रचार कर कहा गया है। असल में अंगूठा दान में लिया गया नहीं बल्कि जब पंडेवादियों ने देखा कि तीर चलाने में वे एकलव्य से पीछे हो रहे हैं तो षड्यंत्रपूर्वक उनके हाथ से अंगूठा काट लिया। जिस तरह की क्रूरता भारतीय संस्कारों में देखने को मिलती है, उस तरह की क्रूरता तो किसी और देश के संस्कारों में देखने को क्या सुनने तक को मिलती नहीं है। यहां तो पढ़ने वालों को धमकी दे दी गई कि अगर संस्कृत को पढ़ना तो दूर, सुन भी ले तो दलित शुद्रों के कान में पिघला हुआ सीसा डाल दो। इतनी निष्ठुरता का संस्कार पंडेवादी बता दें कि और किस देश में है।

आरक्षण के सहारे ही आज दलित शूद्र में परिवर्तन आजादी के बाद आने शुरू हुए हैं। इस आरक्षण के विरोध में विरोधी जमकर नारे बाजी और आग लगाते हैं मानो कोई उसी का हिस्सा चुरा रहा है। मगर यह केवल आरक्षण विरोधियों का

मतिभ्रम है। पंडेवादी पढ़ने-लिखने का आरक्षण व लाभ सदियों से लेता रहा है। खुद पंडेवादी कहते हैं कि पढ़ने-लिखने का हक केवल हमारा रहा है और दूसरे पढ़ने-लिखने से वंचित रहे, यह अमानवीयता नहीं है क्या? इसी अमानवीयता के सहारे सारे दलित शूद्र सताए जाने के साथ ही गरीबी में जीने के लिए मजबूर किए जाते रहे हैं। एक पीढ़ी गंवार हो जाए तो उसका दुष्परिणाम कई पीढ़ियों तक लोगों को भोगना पड़ता है। इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि सदियों तक गंवार बनाने वालों ने कितना अत्याचार, कितना पाप नहीं किया।

बाबा का तिरस्कार पढ़ने-लिखने के बाद पंडेवादी क्यों करते हैं? क्यों उसके ऊपर फूलमाला चढ़ाने से कांपते-थरथराते हैं। केवल इसलिए कि पढ़ने-वाले के अहम् में चूर लोग, उन्हें अथवा उन जैसे हजारों को अपने से छोटा मानते हैं। आजादी के बाद समानता के अधिकार ने दलितों को हौसला दिया। तरक्की का अवसर और तरक्की करने का साधन दिया। आज भी दलित शूद्र उतने अपराधी नहीं है, जितने अपराधी आरक्षण के विरोधी हैं। आज दलित शूद्रों को आरक्षण मिलने के कारण ही देश इतनी तरक्की कर पा रहा है। जो लोग आरक्षण के विरोध में स्वर ऊंचा करते हैं उन्हें देश का ठीक से इतिहास मालूम नहीं है। दलित शूद्रों को आरक्षण के बहाने जो भी मिल रहा है, वह उनका हक है।